संवाद

ऐनी चोइंगा ड्रोल्मा-द सिंगिंग नन

रिकॉर्डिंग के दौरान ऐनी

बीरेश प्रताप सिंघा एवं प्रतिवा श्रेष्ठा

फुलको आंखामा, फूलई संसारा
कांडा को आंखामा, कांडई संसारा
झुलखिनछा है छायां, वस्तु अन्सारा
(फूल की दृष्टि में संसार फूल स्वरूप है, कांटे की दृष्टि में संसार कांटे जैसा है
जितना बड़ा जिसका आकार होता है उसकी छाया उतनी ही लम्बी होती है।)

4 जून 1971 को काठमांडू, नेपाल में तिब्बती शरणार्थी परिवार में जन्मी बच्ची के भविष्य का क्या होगा कोई नहीं जानता था। कम उम्र में घर से भाग कर उसे एक बौद्ध मठ में शरण मिली जहां वह बौद्ध साध्वी बनी और तेरह वर्ष की उम्र में गाने लगी। बाद में एक अमरीकी गिटार वादक के साथ मिल कर उसने अपने गीतों का एल्बम निकाला जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया। अब तक उसके अनेक एल्बम निकल चुके हैं। पूरे विश्व में अपने कार्यक्रम पेश कर चुकी है। साध्वियों के लिए एक स्कूल खोला है। वह अनेक मानवतापूर्ण गतिविधियों से जुड़ी रही है और अब भी जुड़ी है। उसकी आत्मकथा "सिंगिग फ़ॉर फ्रीडम" ग्यारह भाषाओं में छप चुकी है तथा उसे अन्तर्राष्ट्रीय रूप से सर्वाधिक बिकाऊ किताब माना गया है। वह नेपाल मे यूनेस्को की सद्भावना दूत है। उसका नाम है— ऐनी चोइंग ड्रोल्मा।

ऐनी का बचपन संघर्षों में बीता और उसमें ऐसा कुछ नहीं था जिसे वह याद रखना चाहे। उसका बाप रोज़ उसे पीटता था और वह बेबस थी। हर दिन उसकी सहनशक्ति की परीक्षा होती थी और उस दिन वह सीमा ख़त्म हो गई जब उसके बाप ने उसे चाकू से घायल कर दिया। ड्रोल्मा घर से भाग गई। सौभाग्य से वह एक बौद्ध मठ में पहुंची जहां उसे आश्रय और अपनापन मिला। यहां उसने जीवन को फिर से अपनाना सीखा। उसमें नई आशा और जीने की चाह पैदा हुई। नागी गोम्पा साध्वी मठ में रहते हुए उसे गाने की इच्छा हुई और प्रशिक्षण मिला। तेरह वर्ष की आयु में गायन की औपचारिक शिक्षा शुरू हुई।

जब ड्रोल्मा किशोरावस्था में थी तब मठ में उसके गुरू प्रसिद्ध तुल्कु उर्ग्येन से शिक्षा लेने प्रायः अनेक विदेशी भी आते थे। ऐनी चोइंगा ड्रोल्मा को वे लोग ऐनी चुइंग गम बुलाते थे। उन्होंने उसे न सिर्फ़ अंग्रेज़ी भाषा सिखाई बल्कि पश्चिमी संगीत, विशेषतः 'ब्लूज़' से परिचित कराया।

> **साध्वी मठ के मेरे शुरूआती दिनो में मैं काफ़ी उद्दण्ड थी, दिल और दिमाग में नकारात्मकता थी। मैं हमेशा अपने आपको बचाना चाहती थी जिसका अर्थ था गुस्सा होना या झगड़ा करना। लेकिन धीरे धीरे यह सब बदल गया।**
>
> ***– ऐनी चोइंगा ड्रोल्मा***

एक बार जब ऐनी अपनी प्रार्थना गा रही थी तो वहां एक युवक को उसकी आवाज़ बहुत अच्छी लगी। वह युवक था, गिटार वादक बनने का इच्छुक अमरीकी स्टीव टिबेट्स। वह ऐनी की प्रतिभा से चकित रह गया। उसने ऐनी की आवाज़ रिकॉर्ड की और प्रसिद्ध संगीतकार जो बॉयड को भेज दी। टिबेट्स की तरह बॉयड ने भी ऐनी की प्रतिभा को सराहा। टिबेट्स जब काठमाण्डू पहुंचा तो उसने ऐनी के साथ एक एल्बम बनाने का फ़ैसला किया। 1997 में उन दोनों ने मिलकर एक एल्बम 'चो' रिकॉर्ड और वितरित किया। इस एल्बम को सर्वाधिक बिकाऊ एल्बम माना गया। उसके बाद से ऐनी ने मुड़कर नहीं देखा और कितने ही गीत रिकॉर्ड किए जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हुए। उसके जीवन ने अब एक सकारात्मक मोड़ ले लिया था।

एक वर्ष बाद, दो अन्य साध्वियों और स्टीव टिबेट्स के साथ ड्रोल्मा ने अमरीका का संगीतमय दौरा किया जहां उन्होंने नॉर्थम्पटन में अपना पहला 'लाइव' संगीत

कार्यक्रम प्रस्तुत किया। हालांकि कुछ तकनीकी खामियों की वजह से वह उतना अच्छा नहीं हो पाया जितना सोचा था। ऐनी तथा अन्य साध्वियां तेज़ रोशनियों में इतने लोगों के सामने गाने की आदी नहीं थीं। टिबेट्स ने बताया कि "हमारे पहले कार्यक्रम में बहुत से गाने साज़िन्दों के संगीत के साथ शुरू होते थे और अंत केवल गायिकाओं की आवाज़ से होता। मेरा विचार है कि कार्यक्रम पूरी तरह असफल नहीं तो मुश्किल ज़रूर रहा। लेकिन अच्छी बात यह थी कि दर्शकों/श्रोताओं को ऐसा नहीं लगा। कार्यक्रम के बाद लोगों ने ऐनी को घेर लिया।"

ऐसा भी नहीं है कि ऐनी को हमेशा प्यार और प्रशंसा ही मिली हो। जब उसने सार्वजनिक रूप से मंच पर गाना शुरू किया तो बौद्ध मतावलम्बियों ने उसकी काफ़ी आलोचना की। हैरान, परेशान ऐनी सलाह के लिए अपने गुरू तुल्कु उर्ग्येन के पास पहुंची।

वह कहती है "मैंने सोच लिया था कि यदि वे कहेंगे कि यह सब ठीक नहीं है तो मैं बिल्कुल नहीं करूंगी परंतु उनकी प्रतिक्रिया बहुत सकारात्मक थी। उन्होंने कहा 'जो तुम गाती हो वे मंत्र बड़े सशक्त हैं। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि सुनने वाले उनमें विश्वास करते हैं या नहीं। जो कोई उन्हें सुनेगा उसे लाभ होगा।' बस मेरे दिल के लिए उनका यह कहना काफ़ी था और मैं आगे बढ़ने लगी।"

एक घटना इस प्रकार हुई— "बहुत समय पहले जब पहली बार मेरे पास टेप रिकॉर्डर आया तो मैं पश्चिमी संगीत सुनना चाहती थी। बाज़ार में केवल नेपाली और हिन्दी गाने मिलते थे। मैंने अपने गुरू जी के एक विदेश शिष्य से पूछा क्या वह मेरी मदद कर सकता है तो उसने मुझे बौनी रैत का कैसेट ला कर दिया।"

वर्षों बाद सैन फ्रांसिसको में कार्यक्रम के बाद एक महिला ऐनी के पास आई।

"जब मैंने उन महिला को अपनी ओर आते देखा तो मैं चकित रह गई। हे भगवान!" महिला ने मेरे पास आकर कहा "मै बौनी... हूं और तुम्हारी बड़ी प्रंशसक हूं।"

मैंने कहा "आप मज़ाक कर रही हैं, प्रशंसक तो मैं आपकी हूं।"

उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि मैं उनसे परिचित हूं। उन्होंने अपने मित्रों को बुला कर कहा "कमाल है! यह मुझे जानती है।"

ऐनी का मानना है कि यदि समान अवसर मिलें तो साध्वियां भी इस संसार को और बेहतर बनाने की क़ाबलियत रखती हैं। ऐनी की एक शुरूआती और बहुत बड़ी उपलब्धि है *आर्य तारा स्कूल* जो सन् 2000 में खुला। इस स्कूल का उद्देश्य है हुनर तथा शिक्षा प्रदान करके साध्वियों को इस योग्य बनाना कि वे अपने समुदायों की मानवतापूर्ण ढंग से सेवा कर सकें। ऐनी का कहना है कि पारम्परिक रूप से एशिया में औरतों की शिक्षा को नज़रअंदाज़ किया जाता है। वह कहती हैं "मेरे मठ की अधिकतर लड़कियां ग्रामीण परिवेश की थीं और उनसे सिर्फ़ खाना पकाने, सफ़ाई करने और बच्चे पैदा करने की आशा की जाती थी।"

इस स्कूल में उन्हें साक्षरता, गणित और विज्ञान पढ़ाया जाता है। चिकित्सा पद्धति, रोगियों की देखरेख के अलावा उन्हें बौद्ध दर्शन की शिक्षा भी दी जाती है।

ऐनी, लड़कियों की शिक्षा, बूढ़ों की देखभाल, गरीब और बीमारों की सहायता व चिकित्सा के अतिरिक्त अनेक मानवतापूर्ण कामों से जुड़ी हैं। भारतीय राजनयिक तथा कवि अभय के सुझाव के चलते ऐनी ने हमारे ग्रह पृथ्वी के लिए एक औपचारिक वंदनगान की आवश्यकता का समर्थन किया है।

इस प्रकार ऐनी इस बात की मिसाल है कि साध्वियों में, इस संसार में प्रेम और शांति स्थापित करने की अन्दरूनी खूबी और प्रतिभा है।

ऐनी केवल एक गायिका नहीं हैं, उनके गीत केवल गाने के लिए नहीं हैं बल्कि उनके गीतों में सदेश होते हैं शांति, सकारात्मकता, समानता और जीवन मूल्यों के।

ऐनी सही मायनों में शांतिदूत हैं।

बीरेश प्रताप सिंघा *और* ***प्रतिवा श्रेष्ठा*** *नेपाल के महिला संगठन, स्त्री-शक्ति से जुड़े हैं।*

मूल अंग्रेज़ी से अनुवाद -वीणा शिवपुरी